श्री हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

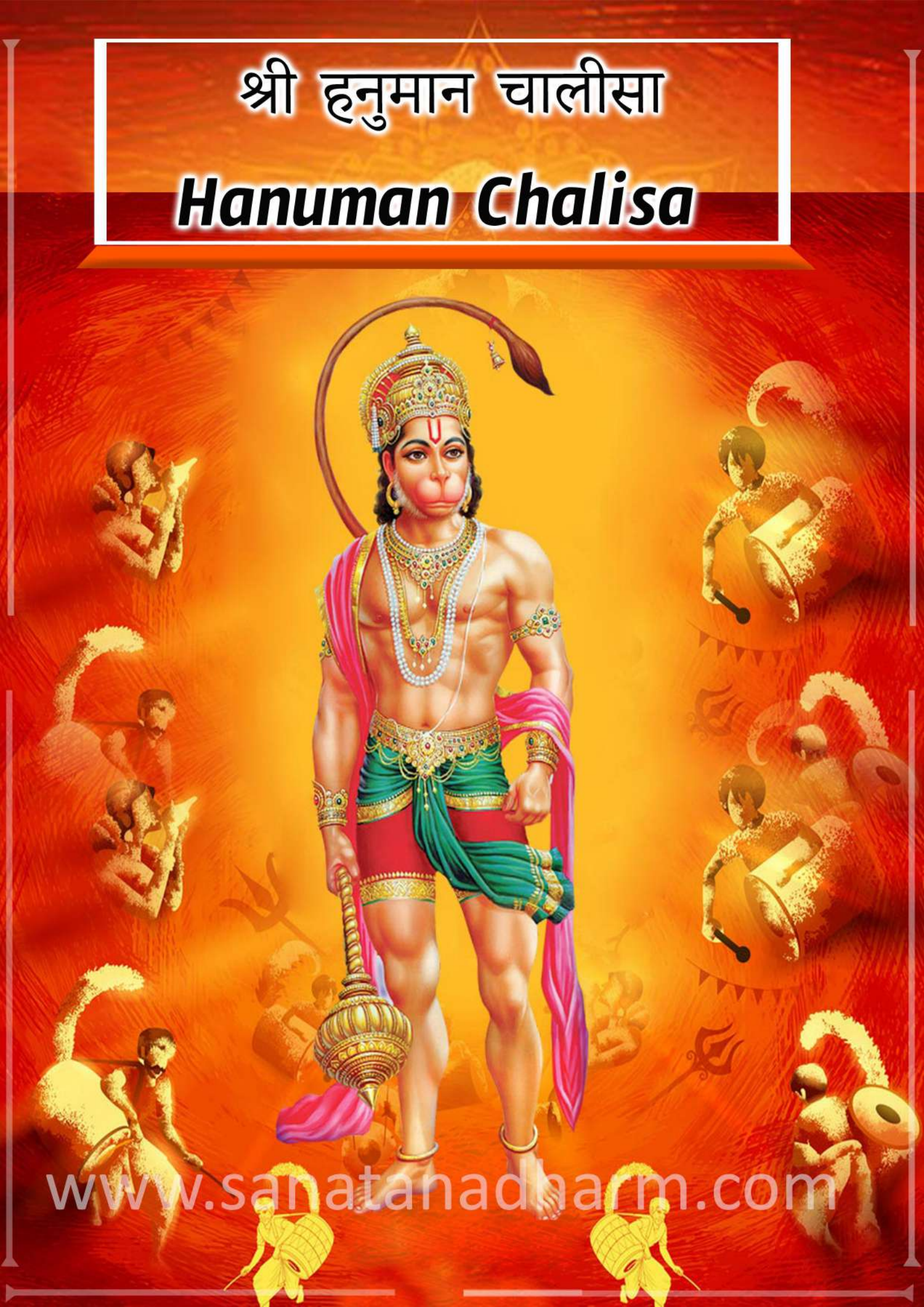

www.sanatanadharm.com

Om ॐ Om

श्री राम राम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।

(इस श्लोक का तीन बार पाठ करना विष्णु सहस्रनाम के पाठ के समतुल्य है)

हनुमान चालीसा भक्ति स्तोत्र जीवंत और शक्तिशाली हनुमान देव के बारे में मुक्त रूप से कहने वाली प्रार्थना है। यह स्तोत्र तेलुगु में रचित है। समुद्र पार करके लंका को नष्ट करने में राम के पराक्रम में सहायक उतने ही अद्भुत हनुमान देव के बारे में यह स्तोत्र है।

इस चालीसा का पाठ कर हर दिन हनुमानजी का आशीर्वाद प्राप्त करें। अपने जीवन को सुखी और पवित्र बनाने के लिए यह स्तोत्र अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। इस स्तोत्र को श्रद्धा और आराधना के साथ स्वीकार करने से प्रसन्नता, आनंद और शांति मिलती है।

www.sanatanadharm.com

अमरनाथ अमर

हनुमान चालीसा

दोहा-

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि
वरणौ रघुवर विमल यश जो दायक फलचारि ॥

अर्थ:— अपने गुरुवर के चरणों की धूल से स्वयं को पवित्र कर लेने के बाद, मैं श्रीराम जी की उस महिमा का वर्णन कर रहा हूँ जो पुण्य, धन, इच्छाएँ और वरदान देता है।

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौ पवनकुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥

अर्थ:- मैं इतना बुद्धिमान नहीं हूँ यह समझकर, हे हनुमान, मुझे शक्ति प्रदान करो। मुझे ज्ञान दो। मेरी सभी समस्याओं को दूर करो।

चौपाई-

जय हनुमान ज्ञानगुणसागर ।
जय कपीश तिहु लोक उजागर ॥ १ ॥(1)

अर्थ:- हे हनुमान, जो ज्ञान और उत्तम गुणों के सागर हो, वानर जाति के स्वामी हो, और तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले हो, तुम्हें बार-बार विजय प्राप्त हो, विजय प्राप्त हो।

रामदूत अतुलित बलधामा ।
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥(2)

अर्थ:- तुम श्रीराम के दूत हो, अपार बल के धनी हो, अंजनी देवी के पुत्र हो और पवनसुत नाम से प्रसिद्ध हो।

हनुमान चालीसा

महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥(3)

अर्थ: तुम बहुत पराक्रमी हो। तुम्हारा शरीर हीरे जैसा मजबूत है। तुम बुराई का नाश करते हो। तुम हमेशा अपने भक्तों की सहायता करते हो।

कंचन वरण विराज सुवेशा ।
कानन कुंडल कुंचित केशा ॥ ४ ॥(4)

अर्थः-जो सोने का शरीर रखता है, अच्छे कपड़े पहनता है, अच्छी झुमके पहनता है, और लहराते बाल रखता है।

हाथ वज्र औरु ध्वजा विराजै ।
कांधे मूंज जनेवू साजै ॥ ५ ॥(5)

अर्थः- जो एक हाथ में वज्रयुधम (गदा) और दूसरे हाथ में विजय का प्रतीक ध्वज (ध्वज) रखता है और कंधे पर जान्यू (वेदी) पहनता है।

शंकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥ ६ ॥(6)

अर्थः- शंकर के अवतार के रूप में, केसरी के पुत्र के रूप में आपकी प्रतिभा और भव्यता को देखकर दुनिया को सलाम किया गया। (सारी दुनिया आपको नमन करेगी।))

विद्यावान गुणी अतिचातुर ।
राम काज करिवे को आतुर ॥ ७ ॥(7)

अर्थः- आप सब कुछ जानते हैं। आपके पास सभी गुण हैं। आप हमेशा काम करने में रुचि रखते हैं।

हनुमान चालीसा

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥(8)

अर्थः- भगवान राम के इतिहास को सुनने में तल्लीन होकर आपने श्री सीता, राम और लक्ष्मण को अपने मन में रखा है।

सूक्ष्मरूप धरि सियहि दिखावा ।
विकटरूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥(9)

अर्थः- आपने एक छोटा सा रूप लेकर पाया है कि सीताम्मा कहाँ है। उन्होंने तोड़फोड़ की और लंका को जला दिया।

भीमरूप धरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज संवारे ॥ १० ॥(10)

अर्थः- जिसने महाबल का रूप धारण करके राक्षसों का वध किया और भगवान राम के कार्यों को पूरा किया।

लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुवीर हरषि वुर लाये ॥ ११ ॥(11)

अर्थः- आपने लक्ष्मण का जीवन बचाया। अगर भगवान राम खुश हैं, तो आप खुश होंगे।

रघुपति कीन्ही बहुत बडायी ।
तुम मम प्रिय भरत सम भायी ॥ १२ ॥(12)

अर्थः- इतने प्रसन्न श्रीराम ने आपकी प्रशंसा की और कहा कि आप उनके लिए उतने ही प्रिय हैं जितने उनके भाई भरत।

हनुमान चालीसा

सहस वदन तुम्हरो यश गावै ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥ १३ ॥(13)

अर्थः- भगवान राम ने कहा कि आप एक हजार मुंह से अपनी प्रतिभा का महिमामंडन कर सकते हैं। जब उन्होंने ऐसा कहा, तो उन्होंने आपको अपने गर्व से छुआ।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।
नारद शारद सहित अहीशा ॥ १४ ॥(14)

अर्थः- सनक, ब्रह्मा, अन्य ऋषियों, नारद, शारदा देवी और शेष जैसे सभी दिव्य प्राणी आपकी महिमा गाते हैं।

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥(15)

अर्थः- यमधर्म, कुबेर, दिकपालक आदि। आपकी महिमा का अनुमान नहीं लगा पाएंगे। महान कवि और विद्वान भी आपका पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकते।

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥(16)

अर्थः- आपने सुग्रीव-श्री राम का मिलन कराया है। इसी कारण सुग्रीव को किष्किंधा की शक्ति मिली।

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भय सब जग जाना ॥ १७ ॥(17)

अर्थः आपकी सलाह को विशेषज्ञ ने सुना और स्वीकार किया। यही कारण है कि वे राष्ट्रपति बने। यह बात पूरी दुनिया जानती है।

हनुमान चालीसा

युग सहस्र योजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥(18)

अर्थः- आप इसे एक मीठा फल समझकर अपने मुँह में भानु (सूर्य) डालते हैं , जो एक हजार योजनों की दूरी पर है।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।
जलधि लांघि गये अचरज नाही ॥ १९ ॥(19)

अर्थः- आपने श्री राम नामक अंगूठी के साथ समुद्र पार किया है।

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥(20)

अर्थः- संसार में काम चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, यह आपके आशीर्वाद से आसानी से पूरा हो जाएगा। यह सब आपकी कृपा से संभव है।

राम दुवारे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥(21)

अर्थः- आप श्री राम के द्वार के रक्षक हैं, आपकी अनुमति के बिना कोई भी वहां प्रवेश नहीं कर सकता है।

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥ २२ ॥(22)

अर्थः- जो आप पर भरोसा करेंगे उन्हें सभी लाभ मिलेंगे। उन्हें किसी बात का डर नहीं है।t

आपन तेज संहारो आपै ।
तीनौं लोक हांक तेँ कांपै ॥ २३ ॥(23)

अर्थः- आप खुद को नियंत्रित करने में सक्षम हैं।
तुम्हारी चीख से तीनों लोक कांप उठेंगे।

हनुमान चालीसा

भूत पिशाच निकट नहिँ आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥(24)

अर्थः- भूत और आत्माएं पास नहीं आती हैं, आपका नाम महावीर है।

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत वीरा ॥ २५ ॥(25)

अर्थः- जो लोग लगातार भगवान हनुमान के नाम का जाप करेंगे, उनकी बीमारियां और पीड़ाएं दूर होंगी। स्वास्थ्य और सुख में वृद्धि होगी।

संकटसे हनुमान छुडावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥(26)

अर्थः- जो लोग अपने मन, शब्दों और कर्मों से आपका ध्यान करते हैं, आप उन्हें संकट से बचा लेंगे।

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥(27)

अर्थः- तपस्या करने वाले राजाओं में श्रीराम सर्वश्रेष्ठ थे। आप उसका काम पूरा करेंगे।

और मनोरथ जो कोयी लावै ।
तासु अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥ [** सोयि **](28)

अर्थः- जो भी आपके पास इच्छाओं के साथ आता है, आप उनके जीवन में अपार परिणाम दे सकते हैं।

चारोँ युग प्रताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥(29)

अर्थः-चार युगों में आपकी महिमा जानी जाती है और दुनिया के सामने जानी जाती है।

अमरनाथ अमर

हनुमान चालीसा

साधुसंतके तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥(30)

अर्थः- सद्गुरु और भक्तों की रक्षा करने की जिम्मेदारी आपकी है। आप राक्षसों के नाश करने वाले श्रीराम के प्रिय हैं।

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता ।
असवर दीन्ह जानकी माता ॥ ३१ ॥(31)

अर्थः- आठ सिद्धियाँ और नौ धन देने की शक्ति आपको जानकी माता ने वरदान के रूप में दी है।

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥(32)

अर्थः- आपके पास राम की शक्ति है। इसके साथ आप हमेशा रघुपति के सेवक बन सकते हैं।

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥(33)

अर्थः- तेरी भक्ति करने से श्रीराम का अनुग्रह मिलता है। जनमों के पीढ़ियों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

अंतकाल रघुपति पुर जायी । [** रघुवर **]
जहाँ जन्मि हरिभक्त कहायी ॥ ३४ ॥(34)

अर्थः- अपने भजन करने से आपको भगवान राम का आशीर्वाद मिलेगा। पीढ़ियों के पाप दूर हो जाएँगे।

हनुमान चालीसा

और देवता चित्त न धरयी ।
हनुमत सेयि सर्वसुखकरयी ॥ ३५ ॥(35)

अर्थः-अन्य देवताओं का स्मरण न होने पर भी यदि आप भगवान हनुमान की पूजा करेंगे तो आपको सारा सुख प्राप्त होगा।

संकट हरै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ ३६ ॥(36)

अर्थः- हनुमान जी का स्मरण करने वालों की सभी परेशानियां दूर होंगी। उनकी सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा।

जै जै जै हनुमान गोसायी ।
कृपा करहु गुरु देव की नायी ॥ ३७ ॥(37)

अर्थः- हे भगवान! प्रभु के सेवक के रूप में मुझ पर दया करो।

यह शतवार पाठ कर जोयी ।
छूटहि बंदि महासुख होयी ॥ ३८ ॥(38)

अर्थः-जो लोग इसे सौ बार पढ़ते हैं, वे बंधन से मुक्त हो जाते हैं और बहुत खुश हो जाते हैं।

जो यह पढै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥(39)

अर्थः-जो लोग इस हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे उन्हें भगवान शिव की उपस्थिति में सिद्धि मिलेगी।

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ ४० ॥(40)

हनुमान चालीसा

अर्थः- तुलसीदास (मेरे जैसे) हमेशा हरि (हनुमान) के सेवक थे।
इसलिये हे
यहोवा, मेरे मन को भी अपना निवास स्थान बना।

दोहा-

पवनतनय संकट हरण
मंगळ मूरति रूप ॥
राम लखन सीता सहित
हृदय बसहु सुर भूप ॥

अर्थः- हे भगवान! आप परेशानियों को दूर करने वाले हैं। आप लक्ष्मण, श्री राम और सीता के साथ मेरे दिल में रहते हैं।

अमरनाथ अमर

www.sanatanadharm.com

हनुमान चालीसा

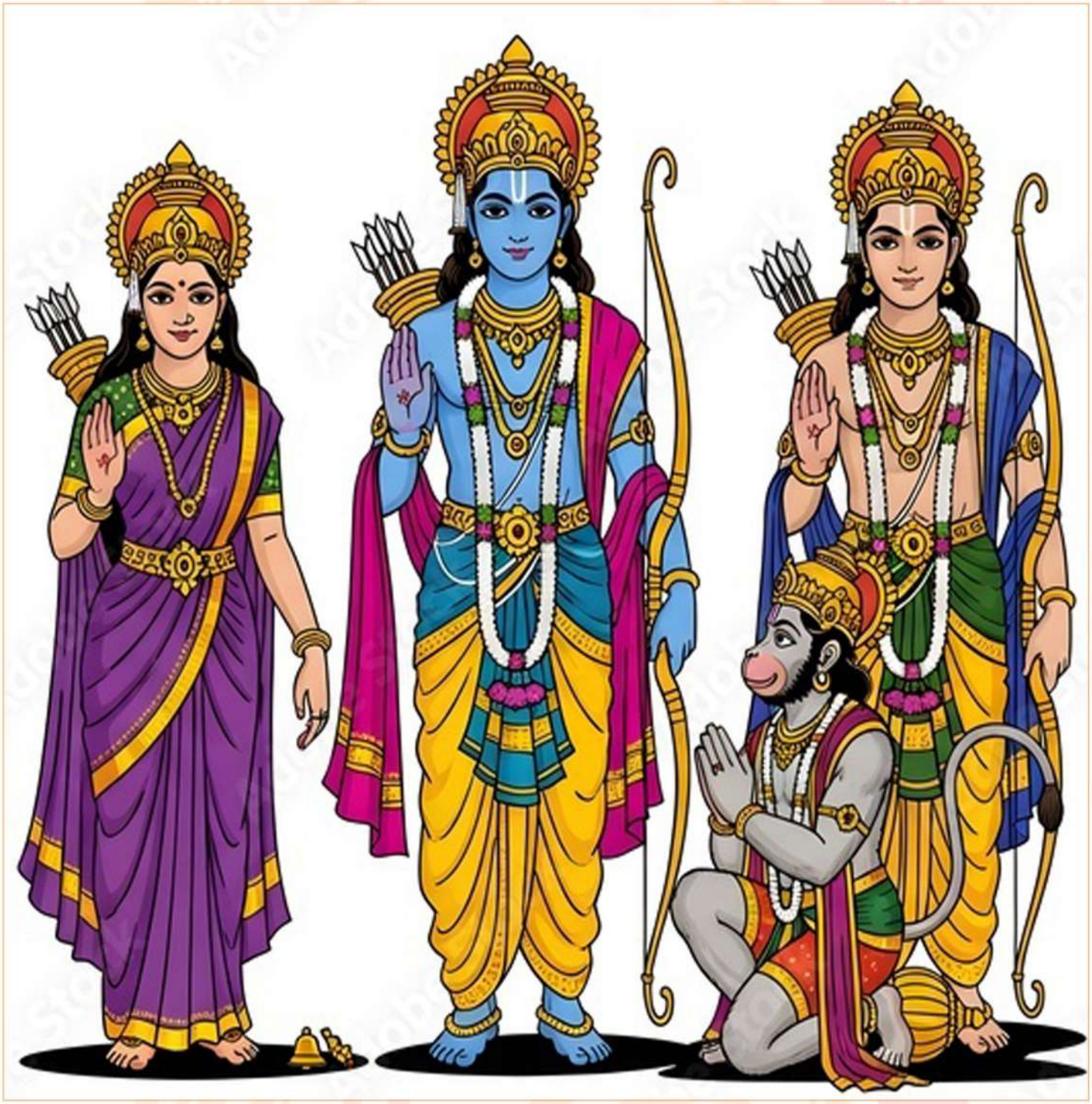

www.sanatanadharm.com

अमरनाथ अमर

హనుమాన చాలీసా

www.sanatanadharm.com

అమర్‌నాథ్ అమర్

www.sanatanadharm.com

donation by - अमरनाथ अमर

हनुमान की पुस्तकों का दान करने से भक्ति और भाग्य बढ़ने की मान्यता है। बल, साहस और भक्ति का प्रतीक हनुमान को सभी सम्मान देते हैं।

ఎవరైనా దాతలు ఆర్థిక సహాయం చెయ్యాలి అనుకుంటే.. మా నంబర్ (PHONEPE, GOOGLEPAY, PAYTM)కు చెయ్యగలరు..

Paytm UPI

9573483440@ptsbi

AMARANATH BHAGAVATH

SANATANA DHARMAM

SANATANA DHARM

5.0★

reviews

10k+

Downloads

3+

Rated for 3+

Open

PLAY STORE APP
WWW.SANATANADHARM.COM

कीमत: ₹ 20.00

हनुमान चालीसा

हनुमान चालीसा

हनुमान चालीसा

अमरनाथ अमर